

सूखा एक मानवजनित समस्या एवं निवारण

जीवन के लिए जल की महत्ता इसी बात से समझी जा सकती है कि भारत के साथ विश्व की सभी बड़ी सभ्यताएँ नदियों के तट पर ही पल्लवित-पुष्पित हुई।

प्राचीन भारतीय परंपरा में तो जलीय प्रकृति में ईश्वर की प्रतिकृति देखी गई और उसे संरक्षित रखा गया प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद जल को औषधि व अमृत तुल्य माना गया है।

अतः जल को बर्बाद करना, उसका कुप्रबंधन, लापरवाही व प्रकृति से खिलवाड़ भयानक आपदा का कारण बन सकता है और बन भी रहा है। ऐसे में रीतिकाल कवि रहीम की बात याद आती है—

“रहीमन पानी रखिए, बिन पानी सब सून।
पानी बिना न ऊबरै, मोती, मानुस चून ॥”

सचमूच पानी बिना सब सूना है। जलीय आपदा का एक रूप है सूखा और यह निःसंदेह 21वीं सदी में विश्व में मानव के लिए एक भयंकर आपदा बनता जा रहा है। प्रकृति की नाराजगी है ‘सूखा’। इस नाराजगी की मूल वजह मानव स्वयं है।

सूखा एक ऐसी जमीन की स्थिति है, जहाँ औसत वर्षा से नीचे की अवधि से गुजरती है, जिसके परिणामस्वरूप लंबे समय तक सूखापन और पानी की समस्या रहती है। सूखा भारत के लिए एक गंभीर समस्या है, और इससे देश के कई हिस्सों में असर पड़ गया है। जलवायु परिवर्तनशीलता से बढ़ने से देश में सूखे या सूखा

जैसी स्थिति में वृद्धि होना असंगत और अप्रत्याशित हो गया है। वर्षा की कमी, सतह और भूजल दोनों स्तरों की कमी इसके कारण है।

- जब किसी क्षेत्र में कई महीनों अथवा वर्षों तक जलापूर्ति में कमी हो जाती है, तब ऐसी स्थिति में उस क्षेत्र को सुखाग्रस्त कहा जाता है।

चिंता पर चिंतन करने से ‘सूखे’ के तमाम कारण नजर आते हैं। बिगड़ता पर्यावरण और प्रकृति से छेड़छाड़ करने वाले मानव ने स्वार्थमयी गतिविधियों से जलवायु में अप्राकृतिक बदलाव कर दिया। दक्षिण-पश्चिम मानसून का देरी से शुरू होना, मानसून में लंबी अवधि का अंतराल, विभिन्न स्थानों में मानसूनी वर्षा का असमान वितरण जैसी कई सूखे की स्थिति निर्मित करती है।

प्रशांत महासागरों में जलधाराओं के गर्म होने से भी कहीं भी बाढ़ तो कहीं सूखे के हाल बनते हैं।

मानव की बढ़ती आबादी, जिससे बढ़ती जरूरतें और इन्हे पूरा करने के लिए बढ़ता स्वार्थ प्रकृति से खिलवाड़ को मानवीय प्रवृत्ति बनाता जा रहा है बढ़ती आबादी का पेट भरने के लिए कृषि, माँस और डेयरी उत्पाद की मांग और पूर्ति में निरंतर वृद्धि हो रही है। ऐसी स्थिति में किसी भी मूल्य पर लाभ कमाने की होड़ में कीटनाशक, रसायन इत्यादि का बेतहाशा प्रयोग पर्यावरण को निरंतर प्रदूषित करता चला जा रहा है, जिससे वर्षा की मात्रा में तो कमी ही आई है।

प्रकृति में उपलब्ध जल की मात्रा भी प्रदूषित हो रही है। भौतिक विकास की अंधी दौड़ में ऊर्जा व उद्योग क्षेत्र में 22 प्रतिशत शुद्ध जल की खपत हो रही है। निस्पक्ष होकर सोंचे तो सूखे की आपदा को हमने आमंत्रित किया है। मानवीय भोगवादी प्रवृत्ति ने सिर्फ भोगना चाहा है। त्याग का भाव तो लुप्तप्रायः ही हो गया है। जलसंरक्षण की दिशा में कम निवेश, भू – गर्भ में जल को रिचार्ज करने में विफलता, अनियंत्रित चराई व वन कटाई जैसे कृत्य भी सूखे की स्थिति के खास जिम्मेदार हैं।

- पृष्ठ भूमि
- सूखा का कारण
- प्रभाव (प्रकृति पर मानव पर)
- विश्व स्तर पर दूरगामी परिणाम एवं संयुक्त राष्ट्र का दृष्टिकोण
- भारत का परिक्षेप्य में स्थिति
- ‘सूखा’ संबंधी बाँकड़ें
- निवारण
- निष्कर्ष

- सूखा का कारण
- ➡ मौसमी (प्रकृति के फलस्वरूप)
- ➡ मानव जनित (मानव के फलस्वरूप)

- सूखा के प्रभाव
- ➡ भारतीय मौसम विभाग के अनुसार

- भारतीय मौसम विभाग के अनुसार, मौसमी सूखा उस स्थिति को कहते हैं जब किसी भौगोलिक क्षेत्र में सामान्य वर्षा 75 प्रतिशत से कम होती है। जब सतही जलस्रोतों में इतनी कमी हो जाए कि स्थापित मांग पूरी न हो सके तो जलीय सूखा पड़ता है, जैसे – नदी झील व तालाब का सूख जाना।

लंबी अवधि तक रहने वाला मौसमी सूखा जलीय सूखा में तब्दील हो जाता है। जब मिट्टी का आद्रता में कमी उत्पन्न हो जाती है, तब कृषि संबंधित सूखे की स्थिति निर्मित हो जाती है। और जब जल की कमी से दैनिक सामान्य जीवन कुप्रभावित होने लगे तो सूखे की भयंकर आपदा नजर आती है। यह चिंता का विषय है कि पिछले दो सालों से भारत के लिए भी सूखा एक भीषण आपदा बन चुका है। यह और भी चिंतनीय है कि वर्षा जन्य के अलावा भारत के 60 प्रतिशत से ज्यादा स्रोतों में पानी की कमी है।

- विश्व स्तर पर दूरगामी परिणाम एवं संयुक्त राष्ट्र का दृष्टिकोण (रिपोर्ट)

कृषि पर सूखे संबंधित स्थितियों का प्रत्यक्ष प्रभाव अकाल और भोजन की कमी पैदा करता है। किसानों को अपने परिवार की आजीविका चलाने के लिए किसी अन्य जगह पलायन करना पड़ता है। सूखा प्रभावित क्षेत्र से अन्य स्थानों में माईग्रेशन पूरे देश में बढ़ता है। लोग, कूपोषण, भूख आदि से प्रभावित होकर विफलता से उत्पन्न अकाल के कारण, लाखों लोग मर चुके हैं।

- वैश्विक स्तर पर तो यहाँ तक कयास लगाए जाने लगे है कि यदि तृतीय विश्व युद्ध हुआ, तो यह जल को लेकर ही होगा। सूखा का समस्या भारत में नहीं अपितु उसके पड़ोसी देश तथा विश्व के अन्य देश जैसे – बांग्लादेश, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, भूटान, अफ्रीकी देश, खाड़ी देशों में भी सूखा की समस्या अत्यंत व्यापक है।

नवंबर 2006 में दक्षिण अफ्रीका के केपटाउन में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा मानव विकास रिपोर्ट – 2006 जारी की गई थी। इस रिपोर्ट में 21 वीं सदी में मानव विकास के लिए सबसे बड़ा खतरा जलसंकट को बताया गया है।

रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन 5 गैलन पानी सुनिश्चित कराने हेतु एक वैश्विक कार्यक्रम के निर्माण की आवश्यकता है। इसके लिए प्रत्येक सरकार को कम-से-कम सकल घरेलू उत्पाद का एक प्रतिशत खर्च करना चाहिये।

- सूखे की वजह से देश का लगभग 40 प्रतिशत हिस्सा, जहाँ भारत की 66 करोड़ आबादी रहती है, जल संकट का सामना करने को मजबूर है। देश में गंभीर सूखे के हालात बन गये हैं।

सबसे खराब हालात महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, तेलंगाना व छत्तीसगढ़ राज्यों की है। सूखे की आपदा भारत में इस कदर तबाही मचा रही है कि किसानों को आत्महत्या करनी पड़ रही है। जिस की प्रथम सभ्यता 'हड़प्पा' में धौलावीरा जल संग्रहण क्षेत्र था।

जिसकी वैदिक सभ्यता में जल कसे ईश्वर माना गया है, कालांतर में भोपाल का भोजताल, रतनपुर के तालाब जैसी जलसंग्रहण व्यवस्था रही वहाँ भी लोग जागरूक नहीं हैं।

छत्तीसगढ़ में भी ग्रीष्मकालीन समय पर सूखे के चलते भू-जल स्तर काफी निचे चले जाने से नलकूप काम नहीं कर रहे हैं। वहीं नतीजतन कई इलाकों में भूख पलायन धीरे-धीरे पैर पसार रहे हैं।

- सूखा के परिक्षेप्य में भारत की स्थिति
- छत्तीसगढ़ की स्थिति

भारत में लगभग 80 % जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। परन्तु लगभग इसमें से 68 % जनसंख्या सूखे से ग्रस्त है। पूरे क्षेत्र में 35 % क्षेत्र 1,125 मिमी. के बीच वर्षा को प्राप्त करता है। सूखा प्रवण कहलाता है।

- सूखा संबंधी आंकड़े भारत के परिक्षेप्य छत्तीसगढ़ के परिक्षेप्य

भारत के क्षेत्र में शुष्क (19.6%), अर्द्धशुष्क (3.6%), उपनमक्षेत्र(21%) के भौगोलिक क्षेत्र है।

छत्तीसगढ़ राज्य में 37.46 लाख किसान हैं जिनमें 80% से भी ज्यादा छोटे किसान हैं, जिनके पास दो एकड़ से भी कम जमीन है छत्तीसगढ़ में 46.85 लाख हेक्टेयर कृषि जमीन है। जिसमें अधिकतम 30 % खेती की जमीन ही सिंचित है।

यानि 70 % से अधिक किसानों के पास सिंचाई का कोई साधन ही नहीं है।

सूखे की आपदा भारत में किस कदर तबाही मचा रही है की किसानों को आत्महत्या करनी पड़ रही है,

- सूखे की समस्या से निपटने के लिए स्थायी नीति व कुशलता के साथ आपदा प्रबंधन का अभाव है। सबसे अधिक कष्ट तब होता है जब वर्षा का जल कभी गंदी नालियों में मिल जाता है तो कभी सूखकर खत्म हो जाता है।

● सूखे का निवारण
(संग्रहण के उपाय)

भारत जैसे देश में कानूनों के साथ आम जनमानस में जलसंरक्षण को धर्म से जोड़ने की भावधारा प्रचलित करनी होगी। इस दिशा में गंगा स्वच्छता अभियान प्रशंसनीय है। तालाबों का पुनरुद्धार करना होगा। देश की नदियों को जोड़ने की योजना को शीघ्रता से पूरा करना होगा ताकि ऐसी नदियाँ जो वर्ष भर जल से परिपूर्ण रहती है। उन्हें ऐसी नदियों से जोड़ना जो मात्र वर्षाकाल में प्रवाहित होती है।

वर्षा के जल को संग्रहीत करने के लिए वलयकार खण्ड, खाई एवं मेंडए गहरी जुताई आदि के द्वारा वर्षा के जल को ज्यादा से ज्यादा संग्रहीत करने का प्रयास करना चाहिये।

- अंततः यह तो तय है कि सूखा प्राकृतिक से कहीं अधिक मानवजनित आपदा है, क्योंकि प्राकृतिक असंतुलन के पीछे मानव का हाथ है। इसलिए इससे निपटने के लिए मानव को स्वयं जागरूक होना होगा। शासन प्रशासन व गैर संगठनों को भी आम – आदमी को जागरूक करने का निरंतर प्रयास करना पड़ेगा।

● निष्कर्ष

जहाँ पानी आसानी से उपलब्ध है, उनको यह भी विचार करना चाहिये। कि जहाँ पानी की उपलब्धता कठिन है, वहाँ एक बाल्टी पानी के लिए घंटो इंतजार करना पड़ता है। व्यक्तिगत झगड़े का विस्तार देश –विदेश तक हो जाता है अतः व्यक्तिगत स्तर पर थोड़ी सी सावधानी और जल के महत्व का अहसास अपेक्षित है।

विद्या अतुल्य अलंकार

RAJPUT TUTORIALS